INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2022; 4(2): 166-173
Received: 08-05-2022
Accepted: 15-06-2022

आलोक श्रोत्रिय
प्रोफ़ेसर, आचार्य एवं अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. मोहन लाल चढार
सह आचार्य, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ जिनेन्द्र कुमार जैन
सहायक आचार्य, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
आलोक श्रोत्रिय
प्रोफ़ेसर, आचार्य एवं अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश, भारत

दारसागर क्षेत्र (जिला अनूपपुर, मध्य प्रदेश) के पुरातात्त्विक समन्वेषण एवं उत्खनन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

आलोक श्रोत्रिय, डॉ. मोहन लाल चढार एवं डॉ जिनेन्द्र कुमार जैन

DOI: https://doi.org/10.22271/27069109.2022.v4.i2c.179

सारांश
मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले में स्थित दारसागर ग्राम के निकटवर्ती क्षेत्र में किए गए पुरातात्विक सर्वेक्षण और उत्खनन से अत्यंत महत्वपूर्ण पुरावशेष प्राप्त हुए हैं । अनूपपुर जिला नर्मदा, सोन और जोहिला नदियों के उद्गम स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। पवित्र–स्थल और तपस्थली के रूप में अमरकंटक की विशिष्ट धार्मिक और अध्यात्मिक महिमा है। अनूपपुर जिले में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय द्वारा किए गए पुरातात्विक अभियानों से क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्त्व के विविध पक्ष उद्घाटित हुए हैं। शिवलहरा की प्राचीन गुफाओं और गम्भीरवा टोला के पुरातन टीलों से प्राप्त सूचनाएँ इस क्षेत्र के इतिहास के प्रच्छन्न तथ्यों को प्रकाशित करती हैं । शिवलहरा की गुफाओं के ब्राह्मी लेख तथा गुफाओं का स्वरूप इस क्षेत्र को प्रथम शताब्दी ई. का एक महत्त्वपूर्ण स्थल सिद्ध करते हैं। इन्ही गुफाओं से दक्षिण दिशा मे लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर केवई नदी के तट पर ही सर्वेक्षण के दौरान पुरावशषों से परिपूर्ण सात बडे टीले प्राप्त हुए थे। जहाँ से कुषाणकालीन ईंटे, मण्डलकूप में प्रयुक्त होने वाली मृण्मय नाली के अवशेष तथा मृद्भाण्ड खण्ड बडी संख्या में प्राप्त हुए। सतही सर्वेक्षण में इन टीलों से प्राप्त सिलबट्टे, कोडियों के अवशेष एवं शंक्वाकार मृण्मय वास्तु खण्डों की प्राप्ति ने इस स्थल के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न की और बाद में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की अनुमति से दारसागर के गम्भीरवा टोला में मध्य प्रदेश राज्य पुरातत्त्व विभाग और डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर शोध संस्थान, भोपाल के साथ मिलकर उत्खनन किया गया गया। उत्खनन के उपरांतआरंभिक ऐतिहासिक कालीन व गुप्तकालीन स्तरों से ताम्रवस्तुएं, हाथी दांत, शंख, पत्थर, पकी मिट्टी और अस्थि पर निर्मित दैनिक जीवन की उपयोगी वस्तुए, मनोरंजन की सामग्री, शंतरज के मोहरे, चौपड़ के पांसें, खिलौना गाड़ियों के पहिये, अंजन– शलाकाएँ, पत्थर के उपकरण, पकी मिट्टी की छोटी गोलियाँ, आभूषण और अस्त्र–शस्त्र प्राप्त हुए हैं जो तत्कालीन मानव–जीवन के विविध पक्षों पर व्यापक प्रकाश डालते हैं। इस शोध पत्र में दारसागर क्षेत्र पुरातात्त्विक समन्वेषण एवं उत्खनन का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके प्राप्त पुरावशेषों का विस्तृत कालानुक्रमिक विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः दारसागर, शिवलहरा, गम्भीरवा टोला, गुफाएँ, शिलालेख, ब्राह्मी लिपि, सर्वेक्षण, उत्खनन, मृण्मूर्तियाँ, पुरावशेष

प्रस्तावना
दारसागर ग्राम मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले की कोतमा तहसील में स्थित है। यह रायपुर–शहडोल रेलवे मार्ग पर कोतमा रेलवे स्टेशन से लगभग 15 किमी एवं अनूपपुर से 40 किमी दूरी पर 28^0 8' 19" उत्तर और 81^0 51'51" पूर्व देशांतर पर स्थित है। यह स्थल केवई नदी के पश्चिमी तट पर अवस्थित है, जो सोन नदी की एक सहायक नदी है। अनूपपुर जिला मुख्यालय से सड़क मार्ग से भी यहाँ पहुँचा जा सकता है। अनूपपुर अपनी धार्मिक और पुरातात्विक विरासत के कारण मध्य प्रदेश के शहडोल संभाग का एक महत्वपूर्ण जिला है। अमरकंटक नामक पवित्र स्थान जो नर्मदा, सोन और जोहिला नदियों का उद्गम स्थल है, इसी जिले में स्थित है।[1]

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
उत्खनन स्थल का निकटवर्ती क्षेत्र और नर्मदा–सोन घाटी अपनी प्रागैतिहासिक पुरावशेषों के लिए समृद्ध एवं प्रसिद्ध है।[2] इस क्षेत्र में पुरातात्विक अन्वेषणों के दौरान पाषाण के औजारों के रूप में विभिन्न प्रागैतिहासिक अवशेषों को प्रकाश में लाया गया है।[3] नदियों ने हमेशा मानव को बसाहट के लिए लुभाया है।

पुरापाषाण और मध्यपाषाण युग में नर्मदा और सोन के क्षेत्र को आदिम मानव नें अपनी गतिविधियों का केंद्र बनाया परिणामतः इस क्षेत्र में पुरापाषाण और लघु पाषाणकालीन औजारों की प्राप्ति प्रतिवेदित है।[4] अब तक ज्ञात पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि अनूपपुर जिले के इस क्षेत्र में भी प्रागैतिहासिक मानव निवास करता था। छठी शताब्दी ईसवीं में यह क्षेत्र संभवतः व्यापक चेदि साम्राज्य के अन्तर्गत था जो उत्तरी भारत के सोलह महाजनपदों में से एक था। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के मध्य में मगध के नंद ने इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त की, जो बाद में मौर्य साम्राज्य का अंग बन गया। मौर्य साम्राज्य के बाद इस क्षेत्र में स्थानीय प्रभुत्व की सत्ता स्थापित हुई। इस काल में त्रिपुरि, एरण, उज्जैन, कौशाम्बी आदि अनेक क्षेत्रों में स्थानीय शासन प्रारम्भ हुआ। मौर्य सम्राटों के अधिकारियों या स्थानीय प्रभावशाली व्यक्तियों ने अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित किए। उक्त स्थानीय राजसत्ताएँ भारत के क्षेत्रीय इतिहास लेखन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

दारसागर के शिवलहरा नामक स्थान में मिले ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख प्रथम शताब्दी ईसवीं में इस क्षेत्र में एक स्थानीय शासक स्वामीदत्त और उसके राजकर्मचारी मूलदेव के अस्तित्व के साक्षी हैं। उत्खनन स्थल से एक किमी की दूरी पर शिवलहरा में सात महत्वपूर्णगुफाएँ है (चित्र क्र. 1) जो मूल रूप से प्रथम शताब्दी ईस्वी के दौरान बनाई गई थीं।प्रथम शताब्दी ईसवीं की ब्राह्मी लिपि,तृतीय शताब्दी ईसवीं की ब्राह्मी लिपि और शैल लिपि में गुफाओं की दीवार पर लघु शिलालेख उत्कीर्ण पाए गए हैं (चित्र क्र. 3–8)। 1927–28 में डॉ. हीरानंद शास्त्री ने आर्क्योलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की वार्षिक रिपोर्ट[5] में तथा प्रो. डी. आर. भंडारकर ने 1933–34 में एपिग्राफिया इंडिका के खण्ड 22 में इन लेखों को संपादित किया था।[6] इन प्रकाशनों में यहाँ की गुफाओं के नाम चेरी गोदड़ी (द्वितीय तल पर चट्टान खोदकर बनी गुफा), दुर्वासा गुफा (16 स्तंभों से युक्त गुफा) तथा सीतामढ़ी गुफा (दुर्वासा गुफा के पीछे लम्बे ब्राह्मी अभिलेख युक्त गुफा) दिए गये हैं जो ब्रिटिश शासन के दौरान जन–प्रचलित रहे होंगे। वर्तमान में इन नामों से स्थानीय जन अपरिचित प्रतीत होते हैं। इस शोध पत्र के प्रथम लेखक (प्रोफेसर आलोक श्रोत्रिय) ने नवीनतम चित्रों और स्याही छापों के आधार पर इन सभी शिलालेखों का पुनर्वाचन करके इनका संशोधित पाठ प्रस्तुत किया है एवं अभिलेखों की विषय–वस्तु की यथातथ्य व्याख्या की है (द्रष्टव्य चित्र क्र. 3–8) । गुफाओं का विस्तृत प्रलेखीकरण एवं अभिलेखों की गहन व्याख्या अन्यत्र द्रष्टव्य है।[7] उक्त नवोन्वेषण से इस क्षेत्र के प्राचीन क्षेत्रीय इतिहास लेखन को महत्वपूर्ण दिशा प्राप्त हुई है।

इन शिलालेखों से राजा स्वामीदत्त के साथ ही शिवानंदी, शिवदत्त, मोगलिपुत मूलदेव, अम्बा आदि के नामों का परिज्ञान हुआ है। उक्त शिलालेख उस समय की राजनीतिक और धार्मिक गतिविधियों के बारे में संकेत देते हैं।ये गुफाएँ ऐतिहासिक और पुरातात्विक दृष्टिकोण से क्षेत्र के महत्व को पुष्ट करती हैं। कुषाण काल के अवशेष भी अनूपपुर के दारसागर जिले के गंभीरवा टोला स्थल से प्राप्त हुए हैं।[8] कौशाम्बी के मघ राजाओं ने दूसरी–तीसरी शताब्दी ई. में अनूपपुर जिले के एक भाग पर शासन किया और उनके सिक्के भी प्राप्त हुए हैं। मूल रूप से ये राजा बांधवगढ़ के थे।[9]ऐसा प्रतीत होता है कि 335–375 ई. में समुद्रगुप्त के शासनकाल में इस जिले के चारों ओर का पूरा क्षेत्र चक्रवर्ती गुप्तों के प्रभुत्व में आ गया था। इस क्षेत्र से उपलब्ध कुछ साक्ष्यों से पता चलता है कि यह क्षेत्र 5वीं शताब्दी के अंत और 6वीं शताब्दी के प्रारम्भ में पांडुवंशी राजाओं के आधिपत्य में चला गया था। शहडोल के सोहागपुर के निकट बम्हनी गांव में इन राजाओं के तीन ताम्रपत्र मिले हैं। मैकल के ये पांडुवंशी मध्य भारत और दक्षिण कोसल के पांडुवंशियों से संबंधित थे।[10] सातवीं शताब्दी के दौरान यह क्षेत्र हर्ष के साम्राज्य का हिस्सा बन गया। हर्षवर्धन के साम्राज्य के पतन के बाद, यह क्षेत्र निस्संदेह कलचुरी साम्राज्य में शामिल हो गया था।[11]

शैलोत्कीर्ण स्थापत्य

केवई नदी के पश्चिमी तट परशिवलहरा (सिलहरा) की शैलोत्कीर्ण गुफाएँ स्थित हैं। इन गुफाओं में मौर्योत्तर काल की ब्राह्मी लिपि के अक्षर, शब्द एवं लेख प्राप्त हुए हैं। प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के भिक्षुओं या संतों के निवास एवं दैनिक जीवन को जानने के लिए शैलात्कीर्ण गुफाएँ महत्वपूर्ण है। भालूमाड़ा के पास दारसागर क्षेत्र के शिवलहरा स्थल में सात शैलात्कीर्ण गुफाएँ हैं, इनमें से तीन गुफाओं में शिलालेख उत्कीर्ण हैं। इन गुफाओं के प्रलेखीकरण का कार्य इन पंक्तियों के लेखकों द्वारा किया गया है। शिवलहरा की पहाड़ी जिसमें खोदकर गुफाएँ बनाई गई है सफेद से हल्के पीले रंग के बलुआ पत्थर से निर्मित है जो महीन दानेदार प्रकृति का है। चट्टान को तोड़कर देखने पर उसमें क्वार्टज़,सिलिका और मृदा के महीन दाने दिखाई देते हैं। दक्षिण की ओर से पहाड़ का अवलोकन करते हुए आगे बढ़ने पर पहाड़ पर प्राचीन से लेकर के अब तक के बहुत से उत्खचन दिखाई देते हैंदेते हैं।पर्यटकों ने विभिन्न प्रकार की आकृतियां बनाकर तथा अपने नाम खोदकर इस पुरास्थल को बहुत नुकसान पहुंचाया है। विभिन्न मानव आकृतियां तथा पशु आकृतियां चट्टान पर खोदकर बनाई हुई दिखाई देती हैं। चेरी गोदड़ी (द्वितीय तल पर चट्टान खोदकर बनी गुफा), दुर्वासा गुफा (16 स्तंभों से युक्त गुफा) तथा सीतामढ़ी गुफा (दुर्वासा गुफा के पीछे लम्बे ब्राह्मी अभिलेख युक्त गुफा) में चट्टान खोदकर बनाए गए कक्ष, आले, अभिलेख एवं स्तम्भ ज्ञात होते है।

दुर्वासा गुफाके उच्चित्रणः

दुर्वासा गुफा सिलहरा (शिवलहरा) की सबसे बड़ी गुफा है। इसमें चट्टान को काटकर 16 स्तम्भ बनाए गये हैं। गुफा में बनाया गया बड़ा हॉल, दो पर्यंकों से युक्त साधुओं के रहने का कक्ष, अंतराल और गर्भगृह आरंभिक शैलोत्खात वास्तु का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। गर्भगृह में सम्प्रति हनुमान की प्रतिमाप्रतिष्ठित है। हनुमान फलक के ऊपर, दायें–बायें तथा गर्भगृह के दोनों ओर बने उच्चित्रण उकेरे हुए हैं। गर्भगृह में हाथी की पीठ पर स्थानकमानव आकृति बनाई गई है। गर्भगृह के बाहर दाहिनी ओर हाथी पर आलथी–पालथी मारकर बैठे हुए एक पुरुषकीआकृति उच्चित्रित है। गर्भगृह के भीतर और बाहर की पुरुषाकृतियों के चेहरों पर दाढ़ी मिलती है। हस्त्यारूढ़ पुरुष के मुखाकृति कालक्रम से अस्पष्ट हो गयी है। पुरुष की लम्बी दाढ़ी नाक से मिलकर सूंड का भ्रम पैदा करती है। फलस्वरुप इसके गणेश मूर्ति होने का भ्रम होता है। वस्तुतःगुफा की अन्य पुरुष आकृतियों से तुलना करने पर यह किसी दाढ़ी वाले व्यक्ति का ही अंकन प्रतीत होता है, गणेश का नहीं।गर्भगृह के बाहर बायीं और बनी यक्ष समान स्थानक पुरुषाकृति के चेहरे पर मंदस्मित हास है और दाढ़ी गले के हार के मध्य लटकती प्रदर्शित है। इसी गुफा में स्त्री (देवी) मस्तक,शिवलिंग, आमलक युक्त लघु शिखर एवं हनुमान की लघु मूर्ति भी है।

चित्र 1 : केवई नदी के तट पर शिवलहरा की गुफाएँ

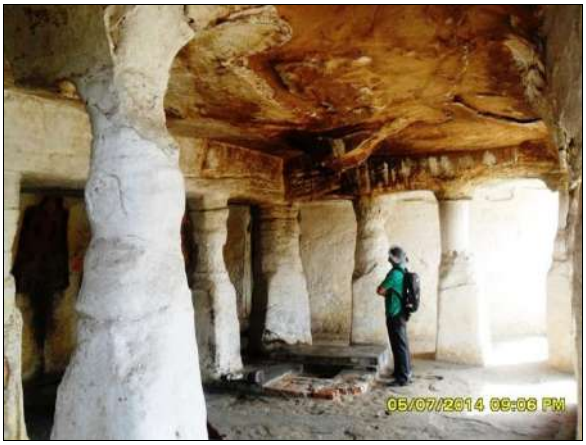

चित्र 2: दुर्वासा गुफा

चित्र 3 : दुर्वासा गुफा में प्रथम शताब्दी ईसवीं की ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख

पाठ:

1. सामिदते राजकरयंतम्हि सिवानंदि पनतिकेन
2. सिवदत नतिकेन
3. ¼सिवमित पुतेन वछेन)
4. ¼मो) गलिपुतेन½
5. ¼मूलदेवेन अमबेन½ पुराबुधवने रोपापिता

चित्र 4 : चेरी गोदड़ी गुफा में प्रथम शताब्दी ईसवीं की ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख

पाठ :

1. सिवानंदि पनतिकेन
2. सिवदत नतिकेन

चित्र 5 : सीतामढी गुफा के स्तम्भ पर तृतीय शताब्दी ईसवीं की ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण लेख

पाठ**:** यु व ति मा ले (युवति माले)

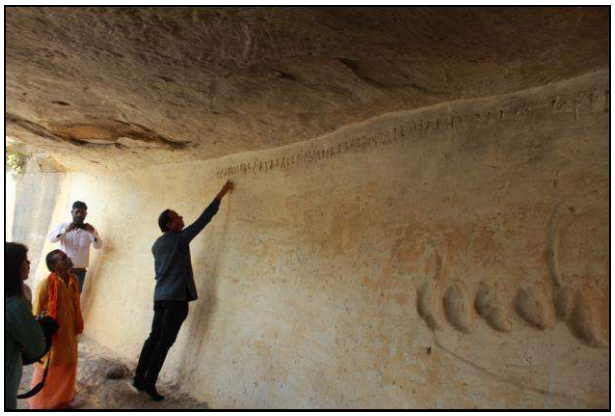

चित्र 6: प्रथम लेखक प्रो. आलोक श्रोत्रिय सीतामढ़ी गुफा के अभिलेख को लक्षित करते हुए

चित्र 7: सीतामढी गुफा में प्रथम शताब्दी ईस्वी की ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख

पाठ **:** सिवानंदि पनतिकेन सिवदत नतिकेन सिवमित पुतेन वछेन म (मो) गलिपुतेन मूलदेवेन अमबि (बे) न सिलागह कारिता

चित्र 7, 8: सीतामढी गुफा में उत्कीर्ण शैल लिपि के अभिलेख

दारसागर क्षेत्र में गम्भीरवा टोला स्थल का उत्खनन

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक के प्रोफेसर आलोक श्रोत्रिय और डॉ. मोहन लाल चढार द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की अनुमति के बाद सत्र 2013–14 में क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया जिसमें इस क्षेत्रान्तर्गत दारसागर गाँव के गम्भीरवा टोला में कुल सात टीलों की खोज की गई। टीलों पर अन्वेषण के दौरान मौर्य कालीन उत्तरी काले परिमार्जित मृदभाण्ड (एन. बी. पी.), लाल प्रलेपयुक्त मृदभाण्ड (रेड स्लिप्ड वेयर) और

मोटे लाल मृदभाण्ड, मिट्टी के मनके (बीड्स), कर्ण फूल (ईयर लोब), लघुपाषाण उपकरण (माइक्रोलिथ)सिल–बट्टे एवं दैनिक उपयोग की अन्य सामग्रियाँ सतही सर्वेक्षण में प्राप्त हुईं।

पुरातात्विक क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान टीले में लगभग तीन से चार मीटर का आवासीय जमाव अन्वेषित किया गया। सतह पर उपलब्ध पुरावशेषों के अध्ययन व विश्लेषण के उपरांत प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, संचालनालय, पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय, मध्य प्रदेश, भोपाल और डॉ. वी.एस. वाकणकर पुरातत्व अनुसंधान संस्थान, भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में उत्खनन कार्य की अनुमति हेतु भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को आवेदन किया गया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण से लाइसेंस मिलने के बाद प्रो. आलोक श्रोत्रिय, डॉ. डी.के. माथुर और डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन के निर्देशन एवं डॉ. मोहन लाल चढ़ार और डॉ. विनय कुमार के सहयोग से सत्र 2014–15 में उत्खनन कार्य किया गया।

गम्भीरवा टोला में खोज के दौरान अन्वेषित गए सात टीलों में से एक सत्र में तीन टीलों पर दल द्वाराउत्खनन कार्य किया गया जिन्हें जीबीटी .ए जीबीटी .प्प और जीबीटी .प्प्प नामांकित किया गया (चित्र 9–10)। इन तीन निखातों से पाँच कालखंडों का सांस्कृतिक अनुक्रम प्राप्त हुआ है।

उत्खनित स्थल का कालानुक्रम

गंभीरवा टोला के उत्खनन का उद्देश्य क्षेत्र एवं स्थल की संस्कृति के कालानुक्रम का अध्ययन करना था। इसलिए संस्कृति का पूरा क्रम प्राप्त करने के लिए अलग–अलग टीलों पर तीन निखात उत्खनित की गईं। इसमें से जीबीटी - III का उत्खनन निखात स्थल की प्रकृति का पता लगाने के लिए किया गया एक मलबा निकासी कार्य था (चित्र क्र. 21) । जीबीटी -I और जीबीटी -II निखातों को प्राकृतिक मृदा की उपलब्धता तक लम्बवत उत्खनित किया गया (चित्र क्र. 9–10) । इन निखातों से प्राचीन बस्ती का एक पूर्ण सांस्कृतिक क्रम सुनिश्चित हुआ है। उत्खनन से पांच सांस्कृतिक कालों के जमाव का परिज्ञान हुआ। सांस्कृतिक काल I को दो उपकालों I-। और I-B में विभाजित किया गया है।

प्रत्येक निखात की विशेषताएँ निम्नानुसार हैं:–

सांस्कृतिक काल– I-A: (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक)

सांस्कृतिक काल– I-B: (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से ईसा पूर्व से पहली शताब्दी ईसवीं तक)

सांस्कृतिक काल– II : (पहली शताब्दी ईसवीं से दूसरी शताब्दी ईसवीं तक)

सांस्कृतिक काल– III: (द्वितीय शताब्दी ईसवीं से चौथी शताब्दी ईसवीं तक)

सांस्कृतिक काल– IV: (चौथी शताब्दी से छठी शताब्दी ईसवीं तक)

चित्र 9: निखात जीबीटी –I

चित्र 10: जीबीटी –II

सांस्कृतिक काल – I

इस सांस्कृतिक काल को मिट्टी के बर्तनों और अन्य वस्तुओं की उपलब्धता के आधार पर दो उप कालखण्डों में विभाजित किया गया है, यथा I-Aऔर I-B :–

कालखण्ड I-A(चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक) :– प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के दौरान इस क्षेत्र में लोगों का निवास था। उत्खनन दल को निखात क्रमांक जीबीटी -I और जीबीटी -II में मोटा वृतिक जमाव प्राप्त हुआ है। जीबीटी -I नामक निखात शहरगड़ई नामक टीले पर ली गई। यह निखात केवई नदी के दाहिने किनारे पर पश्चिम की ओर मुख किए हुए टीले पर लगाई गई थी। इसमें मिट्टी के बर्तन खंडित और मात्रा में बहुत कम प्राप्त हुए हैं। जीबीटी -II निखात से भी प्राग्मौर्ययुगीन संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यह निखात शहरगड़ई टीले के दक्षिण में केवई नदी के तट पर स्थित दानव बाबा टीले पर ली गई थी। यह टीला क्षेत्र में सबसे ऊंचा है। इस निखात में प्राकृतिक मिट्टी तक गहराई में उत्खनन किया गया। इस निखात में क्षेत्र की प्राचीनतम बसाहट के साक्ष्य प्राकृतिक मिट्टी से ही प्रारम्भ प्राप्त हुए हैं। इस चरण में कोई मकान या घर की संरचना नहीं मिली है। इस स्तर के विशिष्ट मृदभांड लाल बर्तन हैं, जिनकी सतह घुटाई या पालिश लिए हुए है। मृदभांड सम्पूर्ण आकार में प्राप्त न होकर खंडित व टुकड़ों की स्थिति में ही प्राप्त हुए हैं।

कालखण्ड I-B(दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से प्रथम शताब्दी ईसवीं तक) :– इस सांस्कृतिक स्तर से उत्तरी काली चमकीले मृदभाण्ड के टुकडे भी प्राप्त हुए हैं (चित्र क्र. 11)। आहत और स्थानीय सिक्के भी इसी चरण से प्राप्त हुए हैं । इस स्तर से प्राप्ततामे के एक ढले हुए सिक्के पर त्रिरत्न का चिह्न है और प्रथम शताब्दी ईस्वी की ब्राह्मी लिपिमें 'च शरण दत (दत्त)' अंकित है(चित्र क्र. 12)। उत्तरी काले चमकीले मृदभाण्ड के टुकड़े जीबीटी -I और जीबीटी -II के चतुर्थ स्तर से प्राप्त हुए हैं जो मौर्य काल की महत्वपूर्ण विशेषता है (चित्र क्र. 13)। इस चरण से वास्तु संबंधित कोई संरचना नहीं मिली है, यद्यपि ईंट और पत्थर के औजार प्राप्त हुए है। इस अवधि के अन्य महत्वपूर्ण पुरावशेषों में मृण्मूर्तियों में मानव और पशु मूर्तियां, पकी मिट्टी के मनके, गोले, पकी मिट्टी की विविध वस्तुएं, तांबे के औजार, हड्डी की पिन और हाथी दांत की चूड़ियों के टुकड़े भी उपलब्ध हैं।

चित्र 11: उत्तरी काली चमकीले मृदभाण्ड

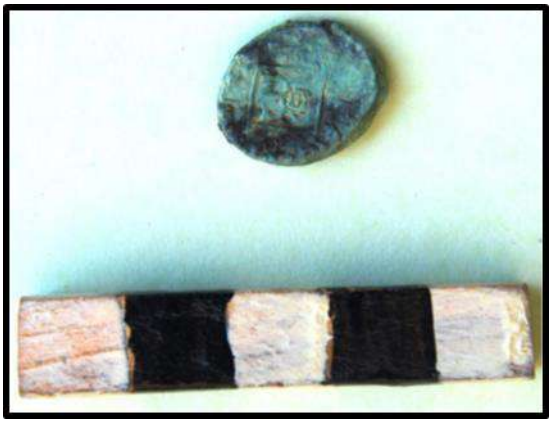

चित्र 12: त्रिरत्न चिन्ह युक्त स्थानीय सिक्का जिस पर ब्राह्मी लिपि में लेख है

इस चरण से लाल चमकदार बर्तन, लाल प्रलेप युक्त मृदभाण्ड, कालेप्रलेप युक्तमृदभाण्ड, चॉकलेटी मृदभाण्ड, अभ्रक मिश्रित लाल मृदभाण्ड, साधारण लाल मृदभाण्ड, काले मृदभाण्ड आदि भी प्राप्त हुए है। अन्य प्रकार के मिट्टी के बर्तनों में मोटे काले और लाल बर्तन भी इसी अवधि में देखे गए हैं। इस स्तर से पकी मिट्टी का एकअंडाकार मानव मुख प्राप्त हुआ है (चित्र क्र. 14)। इस काल में घड़े की बाहरी सतह पर मातृदेवी के समरूप अंकन युक्त बहुत ही महीन काले और लाल रंग के पात्रों की लब्धि उल्लेखनीय है। अन्य महत्वपूर्ण पुरावशेषों में पकी मिट्टी के मनके, ककुदमान वृषभ, छिद्रित ढक्कन, अर्द्धकीमती पत्थरों के मनके, मृण्मय मूर्तियाँ और लोहे की वस्तुएँ परिगणित की जा सकती हैं।

चित्र 13 : उत्तरी काले चमकीले मृदभाण्ड के टुकडे

चित्र 14: पकी मिट्टी का अंडाकार मानव मस्तक

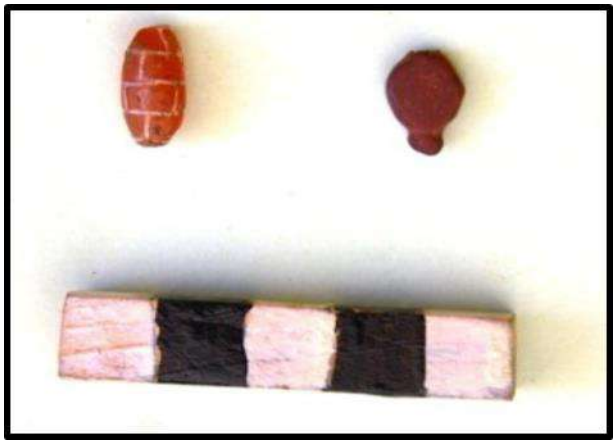

चित्र 15 : अर्द्धकीमती पत्थर के मनके

चित्र 16 : कुषाणकालीन ईंटें

इस लेयर में कुषाण काल की ईंटे (आकार 39 से.मी. ग 25 से.मी. ग 6 से.मी.) तथा विभिन्न प्रकार के मनकों की प्राप्ति महत्वपूर्ण हैं (चित्र क्र. 15–16)। लेयर मिश्रित बजरी (ग्रेवेल) के साथ पीले रंग की है। इस चरण से काले और लाल रंग के प्रलेप युक्त (स्लिप्ड) मृदभाण्ड खंड भी मिले हैं। पिछले चरण की तुलना में मिट्टी के बर्तन इस स्तर से अधिक मात्रा में प्राप्त हुए हैं।

कालखण्ड II (पहली शताब्दी ईसवी से दूसरी शताब्दी ईसवीं तक) :–

द्वितीय संस्कृतिक कालखण्डजीबीटी -I में लेयर संख्या चार से संबंधित है। इस लेयर का रंग मिश्रित लाल मिट्टी के साथ पीला है। इस तल के उत्तर और पूर्वी कोनों में बायीं ओर पीले रंग के साथ काले धब्बे हैं। ईंटें एवं चबूतरे के समान संरचना इसी काल से प्राप्त हुए हैं। स्तम्भ के निचे लाल रंग की ईंटों की आधारनुमा संरचना इसी लेयर चार से जुड़ी हुई पाई गई है। निखात के दक्षिणी भाग की ओर एक ईंट की संरचना मिली है। इस निखात के दक्षिणी और उत्तर कोने में लगभग एक मीटर की दीवार मिली है। दीवार में ईंटों की दो श्रंखलाएँ प्राप्त हुई हैं। जिसमें ईंटों का मापन 39 ग 25 ग 6 सेमी. है। इस लेयर से प्रतिवेदित कुछ अन्य ईंटों की माप 24 ग 18 ग 6 सेमी है।

इस परत में ईंटें, अर्ध–कीमती पत्थर की वस्तुएं, पंच मार्क सिक्का, स्थानीय सिक्के, ईंट के टुकड़े, राख और गड्ढों के साथ पीले ठीकरे पाए गए हैं। परत पीले रंग की थी और बजरी से भरी हुई थी। जीबीटी -I और जीबीटी -II के इस स्तर से टेराकोटा बॉल्स, टेराकोटा स्प्रिंकलर, टेराकोटा डिश, टेराकोटा बीड्स, टेराकोटा खिलौने, स्टॉपर्स, लोहे की कील, और हुए मिट्टी के बर्तनों को भी प्रलेखित किया गया है।

अन्य संबंधित मिट्टी के बर्तनों में लाल पॉलिश किए गए बर्तन, काले पॉलिश किए गए बर्तन, लघु पात्र, चॉकलेट रंग के पॉलिश किए गए बर्तन, काले बर्तन और साधारण लाल बर्तन भी इस स्तर से पाए गए हैं। इस काल के अन्य पुरावशेषों में पकी मिट्टी, अर्द्ध कीमती पत्थरों के मनके, शंख की चूड़ियां और हड्डी की वस्तुएँ भी शामिल हैं। इस कालखण्ड के स्तर से बड़ी संख्या में लौह वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। इसके अलावा इस चरण से जले हुए ईंट के टुकड़े भी प्राप्त हुए हैं।

कालखण्ड III (द्वितीय शताब्दी ईसवीं से चौथी शताब्दी ईसवीं तक) :–

इस कालावधि में मकानों की संरचना का चरण पाया गया है। इस लेयर से आवासीय संरचना प्राप्त के साथ ही पशु और मानव की मृण्मय मूर्तियाँ भी प्राप्त हुईं हैं। इस स्तर की विशिष्टता लाल रंग के मृद्भाण्ड हैं। इस जमाव की मिट्टी ढीली है और उसका रंग पीला है। इसी काल से घर में पत्थर और ईंटों के काम के प्रमाण मिलने लगते हैं। विभिन्न मापों की ईंटें इस स्तर से प्राप्त हुयीं हैं। इस परत से जुड़ी पत्थर की संरचना निखात के पश्चिमी और पूर्वी खंडों में पाई गई थीं। उपयोग किए गए पत्थर का अधिकतम आकार 16 ग 23 सेमी है। इस कालखण्ड के प्राप्त अवशेषों में ईंट–पत्थर के अतिरिक्त मिट्टी के बर्तन और अन्य पुरावशेष सम्मिलित हैं। सबसे उल्लेखनीय काले प्रलेप युक्त मृद्भाण्ड (ब्लैक स्लिप्ड वेयर), ठप्पांकित अलंकृत मृद्भांड, गहरे लाल रंग के मृद्भाण्ड (डार्क रेड वेयर), लाल प्रलेप युक्त मृद्भाण्ड (रेड स्लिप्ड वेयर), इंसीज्ड डिज़ाइन युक्त बर्तनों के साथ साधारण रेड वेयर भी प्रतिवेदित हैं (चित्र क्र.17–18) । इस अवधि को ज्यादातर गहरे लाल रंग के बर्तनों से चिह्नित किया गया है जो सम्पूर्ण स्तर से प्राप्त हुए हैं। लाल रंग के बर्तनों (रेड वेयर) में तीक्षण धार वाली कटोरियों की प्राप्ति भी इस कालखण्ड में देखी गई है। इस स्तर से पकी मिट्टी की लाल रंग की चपटी गोलाकार वस्तुएँ मिली हैं जिन पर उंगलियों के दबाव से बने निशान देखे जा सकते हैं (चित्र क्र. 19)। ये वस्तुएँ संभवतः पूजा के निमित्त देवता को अर्पण करने के किसी कर्मकाण्ड का भाग रही होंगी । विभिन्न मृदा सामग्रियों के अर्पण की इसी तरह की परंपरा आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी देखी जा सकती है। उल्लेखनीय है कि इसी स्तर के उसी कोने में जहाँ ये पकी मिट्टी की चक्रिकाएँ मिली हैं, एक छोटी पत्थर की स्वतन्त्र रूप से बनी चौकी भी मिली है (चित्र क्र. 20)। इन वस्तुओं का निश्चय ही कोई धार्मिक प्रयोजन रहा होगा। यह संभावना प्रकट की जा सकती है कि यह स्थान पूजा और अर्पण के लिए प्रयुक्त किया जाता रहा होगा। चौकी के साथ मिले पत्थर के छोटे लोढ़े संभवतः चौकी पर चन्दन आदि घिसने में काम आते रहे होंगे।

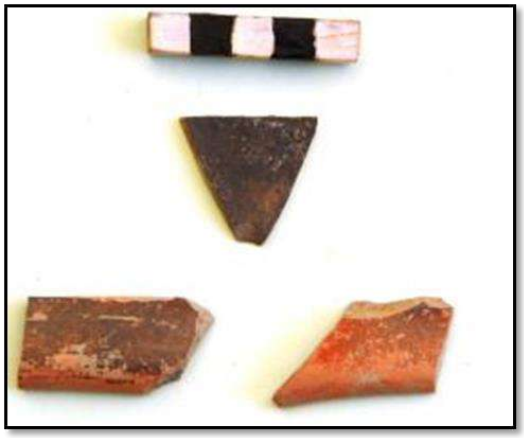

चित्र 17 : काले प्रलेप युक्त मृद्भाण्ड एव गहरे लाल प्रलेप युक्त मृद्भाण्ड

चित्र 18 : ठप्पांकित व इंसीज्ड अलंकृत मृद्भांड

चित्र 19 : पकी मिट्टी की चक्रिकाएँ

चित्र 20 : पत्थर की स्वतन्त्र चौकी एवं पाषाण अवशेष

कालखण्ड IV (चौथी शताब्दी से छठी शताब्दी ईसवी तक) :–

इस कालखण्ड में स्तर या लेयर संख्या 2 और 1 सम्मिलित हैं। दूसरी परत पीली मिट्टी से संबंधित है और पहले तल में पीली मिट्टी और मिश्रित लाल मिट्टी है। गुप्त काल के मृदभांड विशेष रूप से लाल रंग के बर्तनों के साथ–साथ चित्रित काले–लाल मृदभांड के विभिन्न टुकड़े औरविभिन्न आकृतियों और आकारों के कई मिट्टी के बर्तनों का परिज्ञान इस स्तर से हुआ है। इस स्तर से गुप्त काल के विभिन्न आकार और बनावट के बड़े भंडारण जार और ईंटे भी प्राप्त हुई हैं। इस सांस्कृतिक कालखण्ड में पकी मिट्टी, कार्नेलियन, कांच और चाल्सीडोनी के मनके उपलब्ध

हुए हैं। मानव और पशु मृण्मूर्तियाँ, तांबे, लोहे और पत्थर की वस्तुएं, सीप की चूड़ियाँ, हाथी दांत की चूड़ियाँ, पकी मिट्टी की चूड़ियाँ, अस्थि निर्मित बेधक, तांबे की अंगूठी, खिलौना गाड़ियों के पहिये, अंजन– शलाकाएँ, पत्थर के उपकरण, पकी मिट्टी की छोटी गोलियाँ, आभूषण और अस्त्र–शस्त्र, हड्डी और पकी मिट्टी के पांसे उल्लेखनीय हैं। पकी मिट्टी से निर्मित गुप्त काल की एक नारी की मूर्ति उत्कृष्ट मूर्ति कला को दर्शाती है। इस सांस्कृतिक कालखण्ड में तीन संरचनात्मक उप–चरण देखे गए। निर्माण सामग्री में पत्थर, पकी हुई ईंटें और पत्थर की टाइलें शामिल हैं। कुछ घरों में पकी–ईंटों से निर्मित ढकी हुई जल निकासी व्यवस्था थी जो गुप्त काल के अंतर्गत की विशेषता है। इस स्तर से स्थानीय शासक का एक तांबे का सिक्का भी मिला है। इस कालखण्ड से ईंट और पत्थरों को प्राप्त किया गया है।

जीबीटी -III रू(मृत्तिका वलय कूप संरचना)

निखात क्र. जीबीटी .प्प के उत्खनन में दो सुविकसित मृत्तिका वलय कूप प्राप्त हुए हैं (चित्र–17)। वलय कूप की ऊंचाई 1.60 मीटर है जिसमें गोलाकार वलयों को श्रृंखला में ढाला गया है । प्रत्येक वलय की लम्बाई 76 सेमी और ऊँचाई 23 सेमी है (चित्र क्र. 21)। जीबीटी .प्प से 2 मीटर दक्षिण की ओर एक समान आकार के वलय कूप (रिंग वेल) को भी उत्खनन से प्रकाश में लाया गया है। ये रिंग वेल बड़े पकी मिट्टी के छल्लों से निर्मित किए गए हैं, जिन्हें एक के ऊपर एक स्थिर किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इनमें दस छल्ले थे, लेकिन उनमें से ऊपरी छल्ले टूट गए हैं। इस चरण के प्रमुख मृदभांड लाल रंग के है।

चित्र 21 : उत्तरी मृत्तिका वलय कूप संरचना

चित्र 22 : दक्षिणी मृत्तिका वलय कूप संरचना

निष्कर्ष:

दारसागर के समन्वेषण और उत्खनन से प्राप्त पुरावशेष मध्यप्रदेश के पूर्वी भू–भाग के इतिहास और पुरातत्त्व से सम्बंधित अनेक नवीन तथ्यों को उद्घाटित करते हैं। शिवलहरा की गुफाएँ ईस्वी सन् कीआरंभिक शताब्दियों के गुहा स्थापत्य को समझने और तत्युगीन जीवन–चर्या, धर्म और कला को जानने कीदृष्टि से अनुपम हैं। गुहाओं में अंकित अभिलेख और उच्चित्रण स्थानीय इतिहास और कला के प्रच्छन्न पक्षों को सामने लाते हैं।भारतीय पुरालिपि के विकास,प्राकृत भाषा के विकास और अभिलेख शास्त्रकीविशेषताओं का परिचय देने हेतु ये गुफाएँ नवीन विषय–सामग्री उपलब्ध कराती हैं । शंख लिपि के रहस्य को समझने का संकेत भी शिवलहरा की सीतामढी गुफा के एक स्तंभ से दर्शित होता है।दारसागर के गम्भीरावा टोला उत्खनन ने इस क्षेत्र की भौतिक संस्कृति को प्रकट करने वाले पुरातात्त्विक अवशेष प्रकाशित किए हैं जो आरंभिक ऐतिहासिक काल में इस क्षेत्र में निवसित मानव–समुदाय के जीवन, रहन–सहन और विचारों को जानने और समझने की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। इस क्षेत्र में होने वाले भविष्य के शोध निश्चय ही स्थानीय इतिहास को प्रकट करने और इतिहास के अन्धकाराच्छन्न पक्षों को आलोकित करने में उपादेय सिद्ध होंगे ।

आभारः

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग,इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,अमरकंटक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता है जिसने 2013–14 और 2014–15 में प्रो. आलोक श्रोत्रिय को संपूर्ण अनूपपुर जिले के पुरातात्विक सर्वेक्षण तथा सत्र 2014–15 में गम्भीरवा टोला के उत्खनन की अनुमति प्रदान की।इस पुरातात्विक अभियान के सम्पादन में योगदान हेतु लेखकगण इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,अमरकंटक, डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर शोध संस्थान, भोपालतथाराज्य पुरातत्व विभाग, भोपाल के भी आभारी हैं। दारसागर तथा गंभीरवा टोलाके निवासियों के प्रति भी लेखकगण कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं

जिनका सहयोग सर्वेक्षण और बाद में उत्खनन कार्य के दौरान प्राप्त हुआ।सर्वेक्षण तथा उत्खनन में सक्रिय सहयोग के लिए विभाग के शिक्षक डॉ. विनय कुमार तथा विद्यार्थीगण डॉ. यादव राकेश पारसनाथ एवं श्री मनीष शिवहरे धन्यवाद के पात्र हैं। डॉ. हीरासिंह गोंड, सहायक प्राध्यापक, शासकीय राजनगर महाविद्यालय, जिला अनूपपुर और श्री सुरेंद्र कुमार, निवासी दारसागर के प्रति हृदय से आभार है जिन्होंने शिवलहरा की गुफाओं और दारसागर के प्राचीन स्थलों की जानकारी प्रदान की।

संदर्भ

1. मालपानी, जे. एन., अनूपपुर जिले का पुरातत्त्व, संचालनालय, पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय, मध्य प्रदेश, भोपाल, 2009, पृ. 7–11
2. इण्डियन आर्क्योलॉजीः ए रिव्यू; 1962–63, पृ. 11); 1958–59, पृ. 26–27; 1960–61, पृ. 173
3. *इण्डियन आर्क्योलॉजी : ए रिव्यू*; 1961–62, पृ. 100; 1962–63, पृ. 69; 1964–65, पृ. 24, 1965–66 पृ. 42–43
4. चढार, मोहन लाल; *अमरकंटक क्षेत्र का पुरावैभव*, एसएसडीएन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृ. 11–22
5. आर्क्योलॉजिकलसर्वे ऑफ इंडिया की *एनुअल रिपोर्ट*, 1927. 28, पृ. 136–138
6. एपीग्राफिया इंडिका, खण्ड 22, पृ. 30–37
7. श्रोत्रिय, आलोक, चढार, मोहन लाल एवं हीरा सिंह गोंड, ''शिवलहरा की शैलोत्कीर्ण गुफाओं का प्रलेखीकरण और शिलालेखों का विवेचन'', *मध्य भारती*, शोध पत्रिका, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, अंक जुलाई–दिसंबर 2022
8. श्रोत्रिय आलोक और चढ़ार, मोहन लाल, "अमरकंटक क्षेत्र के सर्वेक्षण व उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषो का विश्लेषण", (संपा. दुबे नागेश और चढ़ार, मोहन लाल) मध्य भारत की कला संस्कृति एवं पुरातत्व, नई दिल्ली, 2017, पृ. 188–189
9. शर्मा, आर. के.; मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ, मध्य प्रदेश, हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2010, पृ. 33
10. चढार, मोहन लाल, हिस्टोरिकल रिमेन्स ऑफ अनूपपुर डिस्ट्रिक्ट, प्राग्–समीक्षा, अक्टूबर, 2014, पृ. 135
11. गुरु, एस.डी.; शहडोल जिला गजेटियर, भोपाल, 1994, पृ. 37–38